"ओ मेरे प्यारे पक्षियो, मेरी बात सुनो," वह चीखा। "तुम्हें उड़ने के लिए पंख दिए गए हैं, पिंजरे में रहने के लिए नहीं। आसमान तुम्हारा है, खुला आसमान। तुम्हें आज़ाद होना चाहिए।"

पक्षियों ने उसकी बात सुनी। वे एक-दूसरे की ओर देखने लगे। उनमें से कुछ ने पंख फड़फड़ाए, कुछ ने चोंच खोली, पर कोई उड़ा नहीं। वे वहीं बैठे रहे, जैसे उन्हें विश्वास ही न हो कि यह संभव है।

सुबह तक वह पिंजरा खाली हो चुका था। सारे पक्षी जा चुके थे। केवल एक छोटी-सी चिड़िया वहीं बैठी रही। वह बूढ़ी थी, उसके पंख झड़ चुके थे, और शायद उसे डर था कि बाहर की दुनिया उसके लिए बहुत बड़ी है।